International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-10, Issue-2 March-April-2023
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

हिन्दी बोलियों की पारस्परिकता का भौगोलिक अध्ययन

चन्द्र प्रकाश अग्रवाल, प्रधानाचार्य, शिवकुमार अग्रवाल जनता इण्टर कॉलेज, जहॉगीराबाद, बुलन्दशहर उ0प्र0

राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार–2023 एवं राज्य शिक्षक पुरस्कार–2018 से सम्मानित

यद्यपि भाषा का अध्ययन भाषाविदों द्वारा किया जाता है, फिर भी इसके प्रादेशिक और पारिस्थितिकीय पक्ष का अध्ययन मुख्यतः भूगोल वेत्ताओं द्वारा किया गया है। भाषा का स्थानिक वितरण मानव भूगोल के अन्य पक्ष से सम्बन्धित रहा है। बोली भाषा का ही उपभेद है। यह किसी प्रदेश अथवा समूह के लिये विशिष्ट होती है, फिर भी उसी भाषा के अन्य स्वरूप के बोलने वालों द्वारा समझी जा सकती है। संस्कृत का अग्रेत्तर विकास प्राकृत में हुआ और प्राकृत अपने ऐतिहासिक विकास क्रम में 5 अपभ्रंशों को जन्म देती है, जिससे हिन्दी की 5 उपभाषों से प्रदेशों का निर्माण होता है। इन 5 उपभाषा प्रदेशों के अन्तर्गत हिन्दी की कुल 18 बोलियाँ समाहित है। इनमें एक कौरवी प्रदेश की खड़ी बोली को आधार बनाकर हिन्दी का मानकीकरण किया गया है। अस्तु मानक हिन्दी अपनी इन सभी उपभाषाओं और बोलियों के ऊपर एक अध्यारोपित ससंरचना की तरह आच्छादित है तथा देश की लगभग आधी आबादी एवं क्षेत्रफल को समाहित करता हुआ एक सुविस्तृत हिन्दी प्रदेश का निर्माण करता है। दी गयी सारणी एवं भारत के मानचित्र पर हिन्दी बोलियों का क्षेत्र इसी संदर्भ में दृष्टव्य है।

भाषा	उपभाषाएं	बोलियां
हिन्दी	1. पश्चिमी हिन्दी	1. खड़ी बोली (कौरवी)
		2. ब्रजभाषा
		3. बुन्देली
		4. हरियाणवी (बांगरू)
		5. कन्नौजी
	2. पूर्वी हिन्दी	6. अवधी
		7. बघेली
		8. छत्तीसगढ़ी
	3. राजस्थानी हिन्दी	9. मारवाड़ी
		10. जयपुरी
		11. मेवाती
		12. मालवी
	4. पहाड़ी हिन्दी	13. गढ़वाली
		14. कुमायुंनी
		15. नेपाली
	5. बिहारी हिन्दी	16. मैथिली
		17. मगही
		18 भोजपुरी

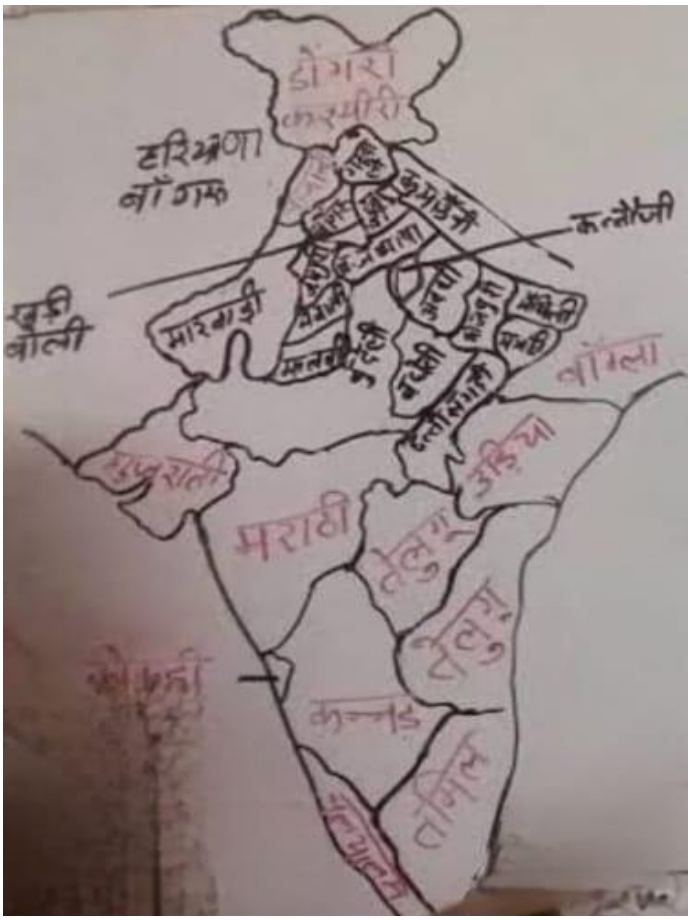

हिन्दी भाषा प्रदेश के अन्तर्गत इसकी बोलियों का क्षेत्र

मानकीकृत हिन्दी और उपरोक्त बोलियों के बीच जो पारस्परिकता का सम्बन्ध है वही विस्तृत हिन्दी जातीय प्रदेश का निर्माण करता है। इस पारस्परिकता को निम्न चार आधार पर पहचाना जा सकता है।

1 ऐतिहासिकता परक
2 जातियता परक
3 बोधगम्यता परक
4. व्याकरणिक समानता

ऐतिहासिकता परक :– हिन्दी की सभी 18 बोलियों की ऐतिहासिक परम्परा का उत्स सस्कृत रही है एवं अपभ्रंश तक इनकी भाषा विकास की साझी परम्परा है। अतः इन सभी बोलियों में ऐतिहासिकता का गहरा साम्य है।

2 जातियता परकः– चूंकी हिन्दी की सभी बोलियों पूर्ववर्ती भाषाओं का तद्भवीकरण की उपज है इसलिए इन सब में संज्ञा, विशेषण, क्रिया, क्रिया–विशेषण, सर्वनाम, काल रचना को लेकर गहरी समानता है। ये सभी बोलियों मिलकर हिन्दी प्रदेश का निर्माण करती है और इन बोलियों के समस्त बक्ता ही हिन्दी जाति के नाम से जाने जाते है। इन बोलियों में साहित्य के समान उपजीव्य है– रामायण, महाभारत, अष्टाइयायी इत्यादि।

3 बोधगम्यताः– हिन्दी क्षेत्र की समस्त बोलियाँ परस्परक बोधगम्यता का सम्बन्ध रखती है। तभी तो एक मैथिली भाषी को भोजपुरी भाषी और भोजपुरी भाषी को अवधी भाषी समझ लेता है।

4 व्याकरणिक समानताः– व्याकरणिक समानता ही हिन्दी को बोलियों के अन्तःसम्बन्ध को पोख्खता बनाती है। यह समानता भौगोलिक निकटता के आधार पर अधिक अभाषित है। निकटवर्ती बोलियाँ यथा– पूर्वी हिन्दी बनाम बिहारी हिन्दी, पश्चिमी हिन्दी

बनाम राजस्थानी हिन्दी, पहाड़ी हिन्दी बनाम ब्रज कन्नौजी, बुन्देली (पश्चिमी हिन्दी) बनाम अवधी अंततः सभी बोलियों के उदाहरणों द्वारा इसे समझा जा सकता है।

पूर्वी हिन्दी बनाम बिहारी हिन्दीः–

पूर्वी हिन्दी और बिहारी हिन्दी अकारांत है। इनकी यह अकारांतता इन्हें एक दूसरे से जोड़ती है। जैसे–जाइत ह। खाइत ह। बिहारी बोलियों में भविष्य काल बोधक व प्रत्यय है जैसे– जयब, खयब। यह 'ब' प्रत्यय भोजपुरी के माध्यम से बिहारी बोलियों को पूर्वी हिन्दी बोलियों से जोड़ देती है। क्योंकि अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी में भी यह 'ब' भविष्यतकाल बोधक कृदंत प्रत्यय उपलब्ध है।

अवधी में संज्ञा के ये तीन रूप–घोर, घोरवा, घौरौना या घोड़, घोड़वा घौड़ौना है। ये तीनों रूप भोजपुरी में भी मिलते है।

- इन दोनों उपभाषाओं में स्वार्थ वा का व्यापक प्रयोग है। जैसे भोलवा, घरवा, बोतलवा।
- पूर्वी हिन्दी और बिहारी बोलियों में कर्ता कौ 'ने' चिह्न नहीं मिलता। इस कारण भी मगही, मैथिली, भोजपुरी, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी एक दूसरे के करीब लगती है।

पश्चिमी हिन्दी बनाम राजस्थानी हिन्दी–

- ओकारान्तता या औकारान्तता के आधार पर ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुन्देली एक दूसरे से निकटता

रखती है। यह ओकारान्तता पश्चिमी हिन्दी के माध्यम से राजस्थानी बोलियों से जुड़ जाती। राजस्थानी की मालवी, मेवाती, मारवाडी आदि बोलियाँ ओकारान्त है।

- जिस तरह ब्रजभाषा में भूतकालिक कृदन्त रूप यौकारान्त है जैसे देख्यो, उसी प्रकार मारवाड़ी में भी भूतकारिक कृदन्त रूप ओकारान्त है। यथा– चकियो।
- पश्चिमी हिन्दी बोलियों की सबसे उल्लेखनीय विशेषता है कर्ता के ने चिहन का प्रयोग। यह खड़ी बोली बॉगरू, ब्रजभाषा का ने/नै चिह्न मालवी, मेवाती में उपलब्ध है। मारवाड़ी के कर्म सम्प्रदान में यह चिह्न मिलता है। मारवाड़ी में खड़ी बोली बाँगरू की ण, ल ध्वनियों का बाहुल्य है मारवाड़ी में खड़ी हिन्दी की तरह औं प्रत्यय लगाकर बहुवचन बनाये जाते हैं। जैसे– रातौं।

पहाड़ी हिन्दी बनाम ब्रज एवं खड़ी बोलीः–

- गढ़वाली में ने, न. ना परसर्ग कर्ता कारक में मिलते है। इसके विशेषण ब्रजभाषा की तरह ओकारान्त होते हैं जैसे काल का कालो।

कन्नौजी, बुन्देली (प० हिन्दी) बनाम अवधी :–

- पश्चिमी हिन्दी की कन्नौजी और बुन्देली का क्षेत्र अवधी से सटा हुआ है। यदि कन्नौजी, बुन्देली अवधी को प्रभावित करती है तो अवधी से प्रभावित भी होती है। पूर्वी अवधी में जें, के, से जैसे सर्वनाम रूप मिलते हैं तो पश्चिमी हिन्दी में जो, को, सो जैसे सर्वनाम रूप मिलते हैं। यह ओकारान्तता निश्चित ही पश्चिमी हिन्दी की कन्नौजी, बुन्देली का प्रभाव है।

अवधी में भविष्यतकाल बोधक क्रिया रूप है युक्त भी होते है। जैसे रहि ह. कहि ह। बुन्देली और कन्नौजी में भविष्यतकाल के रूप ब्रजभाषा की तरह ओकारान्त युक्त न होकर उपकारान्त युक्त होते हैं, तो यह निश्चित ही उन पर अवधी का प्रभाव है।

सभी बोलियों के मध्य साम्यताः–

हिन्दी की सभी बोलियों में स्त्री प्रत्यय लगभग समान है। सिर्फ पूर्वी हिन्दी बोलियों में इकारांतता की प्रवृत्ति आ जाती है। 'निं', इनि', 'आइनि' यथा मालिनि, नाउनि, पंडिताइनि ।

- पूर्व कालिक क्रिया प्रत्यय 'के' भी सबमें एक जैसा ही है। जैसे हम खाना खा के स्कूल गये।
- परसर्गो के स्वरूप में भिन्नता तो है लेकिन ने चिह्न को छोड़कर प्राय सभी बोलियों के अन्य

परसर्गों में क स म प ध्वनियों आवश्यक रूप से मिलती है। यथा–
कारको के म– म. मा. माँ, मह, मोह, माँझ प– पर, परि, पे, पे, प
क– क. का. के, की, को कौ, केर, केरि, कुणी, कुँ, कर
स– सें, सऊँ, साँ, सेनी, सेती

- सभी बोलियों की पदक्रम व्यवस्था भी एक जैसी है। सभी अपनी प्रकृति में मानक हिन्दी की तरह विश्लिष्टात्मक है।
- सभी क्रियायें तद्भव एवं देशज क्रियायें है।

यदि ये बोलियां परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करती है तो ये मानक हिन्दी से भी प्रभावित होती है। मानक हिन्दी की प्राय वर्तमान कालीन क्रियायें कदंत है। जैसे– लड़का पढ़ता है। लड़की पढ़ती है। इन दोनों में 'है' को छोड़कर शेष क्रियायें कृदन्त है।

- भूतकाल के सारे के सारे क्रिया रूप कृदन्त है। जैसे लड़का गया, लड़की गई।

स्पष्टतः हिन्दी की बोलियां परस्पर एक दूसरे को प्रभावित ही नहीं करती, वे मानक भाषा से प्रभावित भी होती है। हिन्दी के उपभाषा प्रभेद मुख्यतः भू–आकृतियों के तृतीयक श्रेणी उच्चावचो द्वारा जनित है, जो मुख्यतः उत्तर के लगभग समतल भू–प्रारूप में नदियों द्वारा विभाजित है। यूँ की जलवायविक जनित लोकसंस्कृति से भी बोलियाँ अधिक स्थानिक हुई है। राजस्थान की बोलियों इसका उदाहरण है। पहाड़ी हिन्दी के उदाहरण को ले तो निसन्देह भू आकृतिक बाधा के कारण इसकी सम्प्रेषणियता दूरी के सापेक्ष अधिक तीव्रता से घटती है। आज के तीव्र संचार में हिन्दी के मानक रूप में क्षेत्रीय बोलियों अपना दृढ पृथक पहचान तिरोहीत करते विस्तृत हिन्दी प्रदेश की प्रादेशिकता को सबल बना रही है। हालांकि बोलियो के अस्तित्व पर यह एकीकरण चिन्तनीय भी है।

सन्दर्भ सूचीः–

1 माजिद हुसैन, मानव भूगोल, संस्कृति, भाषा, धर्म और प्रथाओं की विविधता।
2 हरदेव बाहरी– हिन्दी भाषा, हिन्दी और उसकी उपभाषाएँ और बोलियाँ।
3 डा० भोलानाथ तिवारी, हिन्दी भाषा, हिन्दी क्षेत्र तथा बोलियाँ।
4. डा० नागेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास।
5. Oxford School Atlas.